Managed and Financed by Vagisha Educational Trust
BHAGWAN PRASAD SHEONATH PRASAD B.ED. COLLEGE
Daudnagar, Aurangabad (Bihar) - 824113
Recognized by N.C.T.E. (E.R.C.) Bhubaneswar Orissa (Govt. of India)
&
Affiliated to Magadh University, Bodh Gaya (B.Ed.) & Bihar School Examination Board, Patna (D.El.Ed.)

Ref. :.......................... Date :..........................

3.2.1

Dear Sir/Ma'am

Data template updated please check.

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

Office No. : 7542927888, Mob. : 7739121506, 9431064606
Email : bpspbedcollegedn@yahoo.in | Website : www.bpspbedcollege.in

3.2.1 Average number of research papers / articles per teacher published in Journals notified on UGC website during the last five years

Year	Title of paper	Name of the author/s	Name of journal	Year of publication	ISBN/ISSN number	Link for the UGC recognized Journals
2018	Chatron Ki chamataon par swanwadatmak media ka prabhav	Satyendra Singh Yadav	Airo International Journal	2018	2320-3714	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2020	Reaserch Scholar of Sri Satya Sai University	Satyendra Singh Yadav	UGC care Journal	2020	0474-9330	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2020	Machuware Jeevab ki trashdi aur prem ki darun katha	Sarika Thakur	Abhayantar	2020	2348-7771	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2020	Kala aur Sahitya Kala	Sarika Thakur	Printing Area	2020	2394-5303	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2023	Hindi Stri Vishyak Kavitaon me asmita moolak vimarsh	Sarika Thakur	Akshar Warta	2023	2349-7521	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2023	Samkaleen Hindi kavita me bhartiyata aur sanskritik mulya	Sarika Thakur	Shivna Sahityaki	2023	2455-9717	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index
2024	Sahitya ka darshnik Paripekshya aur hindi kavita	Sarika Thakur	Arunadam	2024	2394-2665	https://ugccare.unipune.ac.in/apps1/home/index

Ref. :.........................

Date :.........................

3.2.1

First page of the article/journals below.

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:15 Issue:3 March 2018 UGC Approval Number 63012

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

छात्रों की क्षमताओं पर संवादात्मक मीडिया का प्रभाव

SATYENDRA SINGH YADAV

RESEARCH SCHOLAR OF SRI SATYA SAI UNIVERSITY

Dr. Hare Krishna

RESEARCH SUPERVISOR OF SRI SATYA SAI UNIVERSITY

सारांश

शिक्षा के प्रत्येक चरण के लिए प्रासंगिक ज्ञान के आधार के निर्माण के लिए प्रत्येक स्तर पर शिक्षक शिक्षा से संबंधित मामले की शैक्षिक और बौद्धिक समझ की एक उच्च डिग्री की आवश्यकता होती है। इसमें शिक्षा से संबंधित विषयों से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान का चयन शामिल है। शिक्षक शिक्षा अपनी सामग्री को दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के विषयों से प्राप्त करती है। ये विषय शिक्षक शिक्षा की बेहतर समझ और आवेदन के लिए आधार प्रदान करते हैं। दार्शनिक आधार छात्र शिक्षकों को दर्शनशास्त्र, प्राचीन और आधुनिक दार्शनिक विचारों के विभिन्न विद्यालयों, और शिक्षा पर दार्शनिक विचारकों के शैक्षिक विचारों और पाठ्यक्रम निर्माण और अनुशासन जैसे विभिन्न पहलुओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय आधार छात्र शिक्षकों को एक राष्ट्र और दुनिया की शैक्षिक प्रणाली में समाज की भूमिका और उसकी गतिशीलता को समझने में मदद करता है। इसमें उन आदर्शों को समाहित किया गया है जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृश्यों को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिक आधार छात्र शिक्षकों को छात्र के मनोवैज्ञानिक मेकअप में अंतर्दृष्टि विकसित करने में मदद करता है। यह छात्र शिक्षकों को अपने स्वयं, अपने छात्रों और सीखने की स्थितियों को समझने में सक्षम बनाता है, ताकि वे अपने छात्रों को सार्थक और प्रासंगिक शिक्षण अनुभव प्रदान कर सकें।संवादात्मक मीडिया संचार का एक उभरता और शक्तिशाली माध्यम है। प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Aurangabad (Bihar)

ISSN: 0474-9030
Vol-68-Issue-69-January-2020

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच संचार मीडिया का प्रदर्शन

Satyendra Singh Yadav

Research Scholar of Sri Satya Sai University

Dr. Hare Krishna

Research Supervisor of Sri Satya Sai University

सारांश

संचार प्रौद्योगिकी क्रांति ने आभासी दुनिया को एक समानांतर दुनिया में बदल दिया है। ल2ज्ञ के बाद के युग को एक आभासी और डिजिटल पीढ़ी के रूप में माना जा सकता है। संवादात्मक मीडिया ने भूगोल, समय और संस्कृति के अंतर को काट दिया। शोधकर्ताओं की एक अच्छी संख्या ने विभिन्न आबादी पर संवादात्मक मीडिया के प्रभाव का अध्ययन किया है। मीडिया ने बाल विकास को किस तरह प्रभावित किया है, यह एक शोध है, जिसके आने के बाद से शोधकर्ताओं ने जांच की है। यह सवाल बहु–विषयक अनुसंधान मुद्दों को उठाता है। समाजशास्त्री, मनोवैज्ञानिक, शिक्षाविद और संचार शोधकर्ता ज्ञान का अंतर भर रहे हैं कि मीडिया ने बच्चों के संज्ञान, व्यवहार, पारिवारिक वातावरण और शैक्षणिक प्रदर्शन पर कैसे प्रभाव डाला है और कैसे जारी रखा है। समय–सीमा और भूगोल को पार करते हुए कनेक्टिविटी की आवृत्ति का उभरते हुए नवजागरणशील समाज में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। वर्तमान अध्ययन माध्यमिक स्कूल के बच्चों पर संवादात्मक मीडिया के प्रभाव का मूल्यांकन करता है। संवादात्मक मीडिया की मुख्य विशेषताएं, भारत में किशोरों का स्थायी विकास, किशोरों और संवादात्मक मीडिया। शिक्षक शिक्षा का संबंध उन पहलुओं से है जैसे, (शिक्षक शिक्षक), किसे (छात्र शिक्षक), क्या (सामग्री) और कैसे (शिक्षण रणनीति)। शिक्षक शिक्षा शिक्षक शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में शैक्षणिक इनपुट की गुणवत्ता और भावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए उनके प्रभावी उपयोग शिक्षक शिक्षकों की व्यावसायिक क्षमता और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को मजबूत बनाने के लिए उपयोग किए जाने वाले तरीकों पर काफी हद तक निर्भर करते हैं। शिक्षक शिक्षा, इस प्रकार, पहले प्रभावी शिक्षक शिक्षकों की तैयारी से संबंधित है।

मुख्यशब्द— माध्यमिक विद्यालय, संचार मीडिया, संचार प्रौद्योगिकी क्रांति, संवादात्मक मीडिया

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा छात्र अध्यापकों को उनके शिक्षण पेशे में प्रभावी रूप से कार्य करने के लिए प्रासंगिक ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल प्रदान करके पहुंचती है। यह छात्र शिक्षकों को वैचारिक और सैद्धांतिक ढांचे से लैस करने का कार्य करता है जिसके भीतर वे पेशे की जटिलताओं को समझ सकते हैं। इसका उद्देश्य पेशे के हितधारकों के प्रति छात्र शिक्षकों में आवश्यक रवैया बनाना है, ताकि वे बहुत सकारात्मक तरीके से पर्यावरण द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकें। यह कौशल (शिक्षण और नरम कौशल) के साथ छात्र शिक्षकों को सशक्त बनाता है जो उन्हें सबसे कुशल और प्रभावी तरीके से कार्यों को करने में सक्षम बनाता है। शिक्षक शिक्षा इसलिए इसकी विषय वस्तु पर ध्यान देती है। शैक्षिक प्रणाली के प्रदर्शन से संबंधित हर कोई इस बात से सहमत है कि शिक्षण गुणों में सुधार किसी भी शैक्षिक कार्यक्रमों में एक उच्च प्राथमिकता है। शिक्षकों को परिवर्तन एजेंटों की भूमिका सौंपी जाती है और उन्हें नई चुनौतियों के साथ प्रस्तुत किया जाता है, उदा। शिक्षा को वैश्विक और स्थायी बनाने के लिए, जीवन के लिए किसी भी वातावरण (या कक्षा से बाहर) और समुदाय के चिंतनशील में सेवा करने के लिए पर्याप्त लचीला। शिक्षकों को रचनात्मक रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बदलावों को अनुकूलित करना और उन पीढ़ियों को तैयार करना सीखना होगा जो सार्वभौमिक, महत्वपूर्ण और रचनात्मक हों और जिनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ दृढ़ पहचान हो। हालांकि, इन–सर्विस शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए एक यथार्थवादी दृष्टिकोण विचार करना चाहिए कि शिक्षक अपने गुणों, दोषों, कर्तव्यों और अधिकारों के साथ सामान्य मनुष्य हैं। अभिव्यक्ति श्इन–सर्विस प्रशिक्षणश उन शिक्षकों के प्रशिक्षण को संदर्भित करता है जो पहले से ही सेवा में हैं। यह ज्यादातर शिक्षक के खाली समय में या स्कूल अधिकारियों द्वारा मुफ्त में दिए गए समय में दिया जाना चाहिए। अच्छे शिक्षक के लिए, उनके ज्ञान, कौशल, व्यक्तित्व और रुचियों का हर पहलू संभावित मूल्य है। इसलिए, वह अपने करियर के दौरान हर उस अनुभव से गुजरता है, हालांकि यह अप्रासंगिक हो सकता है कि उसे इन–सर्विस ट्रेनिंग के रूप में वर्णित किया जाए। इन–सर्विस ट्रेनिंग में वह सब कुछ शामिल होता है जो उस शिक्षक से होता है, जिस दिन वह अपनी पहली नियुक्ति उस दिन करता है, जिस दिन वह सेवानिवृत्त होता है, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, जिस तरह से वह अपने पेशेवर कर्तव्यों का पालन करता है। इन–सर्विस ट्रेनिंग "कोई भी गतिविधि है जो एक

Copyright © 2020Authors

PRINCIPAL
Prasad B.Ed. College

मछुआरे: मछुआरे जीवन की त्रासदी और प्रेम की दारुण कथा

सारिका ठाकुर

ठाकुर निवास, आदर्श नगर, हीरापुर, धनबाद, झारखण्ड-826001

प्रत्येक समाज-स्थान-व्यक्ति व समुदाय की एक विचारधारा होती है, जो सर्व स्वीकृत होकर जन-जीवन का आधार बनती है। जिसे उस समाज की मान्यताओं व परम्पराओं के नाम से सम्बोधित किया जाता है, उन्हीं परम्परागत मान्यताओं को मूल आधार बनाकर अपने जीवन को गढ़ने वाले मछुआरे समाज की त्रासदी का अंकन करती उपन्यास चेम्मीन (मलयालम मूलभाषा /अनुदित- मछुआरे) रचनाकार की एक सफल कृति है।

उपन्यास आंचलिकता को समेटे है जिसमें केरल के समुद्र तट में बसे मछुआरे समाज की कथा, रहन-सहन, जीवन शैली, परिवेश, संस्कृति, परम्पराओं व मान्यताओं आदि का यथार्थ पूर्ण ढंग से चित्रण किया गया है। उस समाज की विशेषताओं को प्रकाशित करना, व्यापक रूढ़ियों से अवगत कराना तथा उसके कारण स्वरूप आगामी भविष्य की ओर संकेत करना उपन्यासकार का विशिष्ट उद्देश्य रहा है यथा "इस महासागर में सबकुछ है बिटिया, सबकुछ। इसमें जाने वाले लोग कैसे लौटकर आते है यह तुझे क्या मालूम! तट पर उनकी स्त्रियों के पतिव्रता से रहने से ही यह होता है। वे पतिव्रता का पालन ना करें तो मल्लाह नाव सहित भंवर में पड़कर खतम हो जाये। मछुआरों का जीवन वास्तव में तट पर रहने वाली उनकी स्त्रियों के हाथ में ही है" चक्की। चक्की का यह कथन स्पष्ट करता है की इस प्रकार की मान्यताओं को स्वीकार करके ही उस समाज में निर्वाह संभव है। रूढ़ मान्यताओं के आधार पर जीवन का संचालन स्वस्थ समाज रूपी वृक्ष की जड़ को खोखला बना देता है, जो नियति न होकर स्वयं व्यक्ति की सजगता के अभाव का परिणाम है। प्रचलित मान्यताओं व अंधविश्वासों तथा मानव मन के विविध पक्षों को उपन्यासकार ने सफलतापूर्वक उजागर किया है तथा आरंभ से अंत तक उन्हीं मछुआरों के संग लेखक की यात्रा चलती रहती है, जिसमें समुद्र में उठने वाले फेनों के माध्यम से मानव के हृदय में उमड़ता ज्वारभाटा (जो स्वयं उस समाज के कृत्यों का परिणाम है) तथा तमाम व्याप्त परिस्थितियों से मानव के मछली की भांति तड़पन को सुंदर चित्रों में गुथा है, जो कई फूलों से गुथी होकर भी अपनी सुगंध से साहित्य उपवन को सुगंधित कर देती है।

मछुआरों के जीवन का उद्घाटन करते हुए उपन्यास प्रेम की उदात्त कथा भी कहती चली आती है जिसमें प्रेम की महत्ता, प्रेम का सौन्दर्य, प्रेम की परिभाषा, प्रेम से मुक्ति का लेखक ने उदाहरण परीकुट्टी और करुतम्मा द्वारा दिया है। "लड़कपन का प्रेम" समय के साथ गहरा और व्यापक होता जाता है, किंतु प्रेम को प्रकट रूप और अंजाम देने में सामाजिक परिस्थितियां, रीति-रिवाज व धार्मिकता आने-जाने का काम करती है। परिस्थितिवश पलनी की विवाहिता (मल्लाहिन) होकर भी करुतम्मा हृदय में प्रेम को संजोये रखती है यथा "उसका मल्लाह अकेला समुद्र में था। वह दूर समुद्र में कांटा डाल रहा था। उस समय करुतम्मा को प्रथम मल्लाहिन की तरह तट पर खड़ी होकर एकाग्र चित्त से तपस्या करनी चाहिए थी पर वह पड़ी-पड़ी परी के बारे में सोच रही थी, लेकिन पूर्ण चेतना के साथ नहीं। वह जागी नहीं थी। सोई भी नहीं थी। परी बेचारा अच्छा आदमी था। करुतम्मा भी उसे प्यार करती थी। यह सब बातें स्पष्ट हो गयीं। करुतम्मा जीवन भर परी को नहीं भुला सकती थी। परी उसका था और वह परी की थी" (पृष्ठ संख्या - 238)। सामाजिक मान्यताओं का निर्वाह करते हुए भी यह प्रेम सम्बन्ध अंत में समाज को चुनौती देता है। प्रेम कथा का अंत अत्यंत दारुण होता है, किन्तु यह दुखद अंत भी प्रेम के त्याग और समर्पण को ही साकार करता नजर आता है। परीकुट्टी और करुतम्मा के प्रेम को ना स्वीकार करने और ना ही पलनी और करुतम्मा के दाम्पत्य को स्वीकार करने की स्थिति में भारतीय समाज की विसंगतियों को उजागर किया गया है।

पारम्परिकता से जुड़ी रूढ़ियों को उजागर करने के लिए लेखक नयी शक्ति, नए विचार के तत्वों द्वारा एक अनूठा प्रयास है जो कि हमें समकालीन समाज की कई समस्याओं से रूबरू कराती है। आंशिक रूप में उपन्यास के जीवन की अभावग्रस्तता को दर्शाती है। उनके सम्पूर्ण जीवन का निर्वाह समुद्र पर आश्रित है वर्ष के उस अवधि में जब मल्लाह समुद्र में नहीं जाते और अब तक की पूंजी से उस काल निर्वाह करते है, वहीं कर्ज लेकर जीवन यापन को बाध्य भी होते है। उपन्यास में छोटे-छोटे कथन और घटनाएं उनके जीवन की दयनीय दशा की ओर भी पाठक का ध्यान आकर्षित करती है। गोदान उपन्यास भी इसी ऐसी ही अभावग्रस्तता और संघर्ष की कथा कहती है। किन्तु व्यक्ति की इच्छा या चाह की पूर्ति अलग-अलग रूपों में होती है। जहाँ मछुआरे के पात्र (करुतम्मा के पिता) इच्छा की पूर्ति (नाव और जाल) हेतु मानवीय गुणों और संवेदनाओं को ताक पर रख देते है वहीं होरी अंत तक अपने निश्छल व्यवहार का परिचय देता है। किन्तु जिजीविषा का अभाव, दयनीय स्थिति, और साहूकार की मानसिकता उसी रूप में कार्य करती नजर आती है। उपन्यास स्त्री विमर्श के कुछ पक्षों को भी उजागर करती है। स्त्री पात्रों के अध्ययन से तत्कालीन समाज और परिवार में उनकी स्थिति तो ज्ञात होती है, साथ ही उनकी वेदना भी पाठक को ठहर कर सोचने को बाध्य करती है। पवित्रता और सदाचारिता सम्बन्धी नियम और उसके पालन की जिम्मेदारी केवल स्त्री पात्रों के साथ ही है। और यह पवित्रता ही उनके मल्लाह की समुद्र से लौटकर कुशलतापूर्वक आने का प्रमाण भी, यह भी पात्र अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित भी है किन्तु समाज की संकुचित मानसिकता से व्यथित

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

२ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–२०

३ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–२०

४ संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन

५ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२१

६ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२१

७ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२९

८ इंडिया टुडे, ३१ जनवरी २००५ पृष्ठ–४८

९ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२७

९ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२९

१० उपनिवेश में स्त्री, प्रभा खेतान, राजकमल, पृष्ठ संख्या–११

११ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाश, पृष्ठ संख्या–२९

१२ उपनिवेश में स्त्री, प्रभा खेतान, राजकमल, पृष्ठ संख्या–२७

१३ पत्ता पत्ता बूटा बूटा, काशीनाथ सिंह, सं. अभिजीत, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ संख्या–३२

□□□

28

कला और साहित्य कला

सारिका ठाकुर
भोगपुर, धनबाद, झारखण्ड

हम अक्सर सुनते हैं कि वह कलाकार है, उसके कार्यों में कलाकारी है, वह कला प्रेमी है या उसकी अभिव्यक्ति कलात्मक है, और जाने–अनजाने, प्रत्यक्ष– अप्रत्यक्ष हम इससे जुड़ते हैं या जुड़ते चले जाते हैं। न केवल जुड़ाव, अपितु हमारे जीवन को समृद्ध करने में भी कला की विशेष भूमिका है।

कभी काव्यात्मक, तो कभी शिल्पगत, कभी भाषागत तो कभी भावगत यह अभिव्यक्ति जाती रही है।

यह स्वयं में इतनी व्यापकताओं को समेटे है कि विभिन्न परिभाषाएं, केवल एक या एक से अधिक विशेष पक्ष को उजागर करके रह जाती है। भारतीय परम्परा जो सदैव कला से जुड़ी है वह जिसने भारतीय संस्कृति को सदैव अवर्णनीय और अनुकरणीय बनाया है। इनसे क्रियाओं के रूप में देखती है। कला शब्द का प्रयोग सम्भवतः सबसे पहले भरत के नाट्यशास्त्र में मिलता है। यूनानी साहित्य में कला शब्द का प्रयोग कौशल के रूप में परिलक्षित होता है।

प्लेटो के अनुसार कला—सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।

टैगोर के अनुसार—कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे एक की अनुभूति को दूसरे तक पहुंचा देना ही कला है के रूप में स्वीकार किया है।

इस प्रकार कला को विभिन्न रूपों में देखने, समझने और परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। कुछ विद्वान कला को कोमल, मधुर, अद्भुत व सुन्दर

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Shoonam Prasad B.Ed. College

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - VII, May - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

'हिन्दी स्त्री विषयक कविताओं में अस्मितामूलक विमर्श'

सारिका ठाकुर

शोधार्थी, हिन्दी साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

शोध सारांश:- यथार्थ के धरातल पर संभावनाओं का सृजन साहित्य का ध्येय रहा है। उस यथार्थ में मानव जीवन, मानवीय परिस्थितियाँ, कार्यप्रणाली व जीवन मूल्यों के केंद्र में मनुष्य है। मनुष्य और मनुष्यत्व या यों कहें मनुष्य की छवि के रूप में प्रतिस्थापना ही उसका मूल है। मानव जीवन, सामाजिक व्यवस्था के सुचारु संचालन व समन्वय में अस्तित्व की लड़ाई प्रमुख रूप से सामने उभरकर आती है, क्योंकि मूल प्रश्न अस्मिता के खतरे को लेकर ही है। ऐसे में स्त्री जो कि 'सबाल्टर्न साहित्य' का हिस्सा रही। उसके अस्तित्व के संघर्ष की पड़ताल में साहित्य की भूमिका का अध्ययन व मनन आवश्यक है। ताकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसका मूल्यांकन किया जा सके। हिन्दी साहित्य की श्रेष्ठतम विधा कविता में यह विविध संदर्भों में दृश्यमान होता है। जो स्त्री के पहचान, स्वातंत्र्य, अभिव्यक्ति व उन्मुक्ति हेतु प्रयत्नशील है और इनके उन्नयन हेतु साहित्य द्वारा समाज में विशेष भूमिका का निर्वहन करती नज़र आती है। अतः हिन्दी साहित्य के अंतर्गत स्त्री केंद्रीत कृतियों ने अस्मितामूलक विमर्शों द्वारा साहित्य और समाज के वैचारिक धरातल को समृद्ध करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन किया है।

बीज शब्द:- विमर्श, कविताएं, अस्मिता, आलोचकीय, अभिव्यक्ति, मूल्यांकन, वैचारिक धरातल, आत्मबोध, उन्मुक्ति, अभिशासिकरण, प्रतिरोध, सबॉल्टर्न, सशक्तिकरण।

मूल आलेख:- सृजन की क्षमता साहित्य का मूल है। वह सृजन शब्द का हो, भाव का हो या विचार का ही। वह जन्म देती है एक मौलिक दृष्टि को, मौलिक चिंतन को। जिसमें साहित्य के अपार आसार का जन्म होता है। जो मनुष्य को केंद्र में रखकर अपनी आलोचकीय विवेक का प्रयोग करते हुए तमाम विमर्शीय विषयों तक ध्यान आकर्षित करते है। परिणामस्वरूप जहाँ साहित्य के अक्षुण्ण भंडार में वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर समाज की दिशा भी परिवर्तित होती है और नूतनता का स्पर्श पाकर साहित्य और भी अदृश्यमान तक पहुंचने हेतु साधना के पथ पर चल पड़ता है। जिसका एक सार्थक प्रयास अस्मितामूलक विमर्श में दृष्टिगोचर होता है।

साधारणतः अस्मिता से आशय पहचान से है। जो मनुष्य के मूल से जुड़ा हुआ है। जिसको पाने, जिसकी अभिव्यक्ति करने व जिसके उन्मुक्ति में मानव समुदाय एक लंबे समय से प्रयत्नशील है। अप्रत्यक्ष रूप से तो प्रत्येक मानव की यात्रा से ही उसकी अस्मिता की यात्रा का प्रारंभ हो जाता है, किंतु प्रत्यक्षतः आधुनिक साहित्य में हम देख सकते है। व्यक्तिक बोध द्वारा स्व का परिचय व स्व के विस्तार के साथ-साथ मानवीय गुणों व प्रवृतियों का विकास और आत्मान्वेषण द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में उपलब्धि व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होते है और बहुप्रयत्नों द्वारा निर्मित व्यक्तित्व की यह छवि उसे एक पहचान देती है। जिसमें उनका समूचा व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है और यही अस्मिता के रूप में परिभाषित होती है। जहां अन्य से परिचय संभव होता है। इसके निर्माण में एक लंबे संघर्षों को प्राप्त कर व्यक्ति इसका भागी बनता है। राजेंद्र यादव के शब्दों में -'अस्मिता अपनी निजी पहचान के साथ-साथ उस क्षेत्र और समाज के पहचान की भी है, जो हमारे संदर्भ तय करते है'

'आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है' कथन यहां सही मायने में चरितार्थ होती नजर आती है। विमर्श की आवश्यकता तब उत्पन्न पड़ती है, जब समाज में ऐसे अवांछनीय तत्व बढ़ जाते हैं। जो मानव के साथ-साथ समाज की छवि को धूमिल करते नजर आते है। अपने अधिकारों, आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति में उत्पन्न अनावश्यक संघर्ष व चुनौती ही अस्मिता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति उस पर घिरे संकट को देख छटपटा उठता है और उससे मुक्ति हेतु अंतः के साथ बाह्य संघर्ष को भी प्रयत्नशील हो उठता है। समाज में असमान व्यवहार, शोषण, वंचना, भेदभावजनित वातावरण, रूढ़बद्ध धारणाएं, जटिल जीवन स्थिति, मानसिक पिछड़ापन, शैक्षिक अवसरों के साथ ही अभिव्यक्ति के अवसर का अभाव आदि तमाम कारणों ने कई वर्गों को मुख्यधारा से वंचित रखा। जिनमें धर्म, जाति, भाषा, लिंग, वर्ग, क्षेत्र व वर्ण आदि की विशेष भूमिका रही। जिसके लिए मात्र मनुष्य व समूह नहीं, अपितु समूचा समाज जिम्मेदार है। जिसका स्पष्टीकरण राजेंद्र यादव की उपरोक्त कथन से हम पाते है:- 'अस्मिता जितनी मेरी है, उतनी ही मेरे परिवेश और परंपरा की भी। उसमें वर्ग, वर्ण, क्षेत्र, धर्म, लिंग, परंपराएं सभी कुछ घुसे और घुले-मिले हुए है' परिणामस्वरूप मनुष्य विभिन्न खेमों में बँटता गया और अपनी दुर्दशा को बाध्य हुआ। जिसमें दलित वर्ग, आदिवासी वर्ग, थर्ड जेन्डर, मुस्लिम वर्ग व स्त्रियां आदि विशेष रूप से सम्मिलित है। जिनके प्रतिरोध का स्वर अस्मिता विमर्श के केंद्र में आ गए। मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकतावाद आदि का प्रभाव अस्मितामूलक विमर्श पर पड़ा, किंतु विशेष रूप से सबाल्टर्न, उत्तर आधुनिकता और उपनिवेशवाद संबंधी विचार इसके सिद्धांत में सहायक नजर आते है और परंपरावादी रूढ़िबद्ध धारणाओं के विरुद्ध एक वैचारिक विद्रोह के रूप में उभरकर सामने आते है। जिनमें अस्तित्व की लड़ाई साहित्य द्वारा समुचित समाज की संरचना, व्यवस्था व कार्यप्रणाली में प्रश्नचिन्ह लगा देते है। पहचान की लड़ाई का यह प्रयास संघर्ष से प्रारंभ होता है। संघर्ष का फैलाव अत्यंत विस्तृत है। यूं तो संपूर्ण नारी जीवन ही संघर्षमय है, किंतु सही मायने में संघर्ष का प्रारंभ उत्तर वैदिक काल से देखा जा सकता है। इतिहास के संदर्भ पर हम पाते है पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं थी। उसका नाम जन्म से मृत्यु तक पिता, भाई, पति व पुत्र के साथ पैबंद की तरह

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

(शोध आलेख)

समकालीन हिन्दी कविता में भारतीयता और सांस्कृतिक मूल्य

शोध लेखक : सारिका ठाकुर
(शोधार्थी) हिन्दी साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा

सारांश - कविता युग और जनमानस का प्रतिबिंब होती है, जो अपने-आप में समाप्त संदर्भ को समाहित करने की क्षमता रखती है। यही कारण है कि साहित्य के इतिहास के प्रारंभिक काल से आज तक काव्य उत्तरोत्तर विकास और साहित्य के अक्षुणन भंडार को समृद्ध करती नज़र आती है। ऐसे में कविता की ज़मीन उससे कैसे वंचित रह सकती है। एक विशाल भू-खंड में फैला यह देश 'भारत' अपने में समृद्धशाली परंपरा का प्रतिनिधित्व करता नज़र आता है, जिसमें परंपरा, इतिहास, वैशिष्टता और संस्कृति का अद्वितीय समाहार है, जो कविता की ज़मीन को भी स्पर्श करती है। समकालीन कविता वर्तमान परिपेक्ष में भारतीयता और सांस्कृतिक पक्षों को अभिव्यक्त करती नज़र आती है, जो बहुरंग लिए उपस्थित है। भारतीयता की छवि, लोकजीवन, लोकश्रम, मनुष्य की जिजीविषा, मूल्यपरकता, परिवर्तन, संघर्ष, उपभोक्तावादी नग्न अपसंस्कृति आदि द्वारा एक ऐसे कोलाज की निर्मिति करती है, जिसमें भारतीय बोध, प्रेम, सद्भाव, विचार, सांस्कृतिक गंध, विद्रोह, कटाक्ष व मुक्ति आदि तमाम तत्व दृष्टिगत होते हैं। यह तत्व पारंपरिक धरोहर को समाहित किए आप में उसके संरक्षण द्वारा लोगहिताय को प्रयत्नशील है। अपने मूल से जुड़ी होकर समकालीन कविता भारत और उसके सांस्कृतिक मूल्यों हेतु निरंतर संघर्ष करती नज़र आती है।

बीज शब्द- भारतीयता, परम्परा, साहित्येतिहास, संस्कृति, समकालीन काव्य, मानवीयता, प्रजातांत्रिकता, स्वच्छंदतावाद, सामाजिकता, मूल्यधर्मिता, लोकजीवन, उपभोक्तावाद, वस्तुकेंद्रण तथा व्यापारमूलक दृष्टि।

प्रस्तावना "भू-लोक का गौरव प्रकृति की पुण्य लीला स्थल कहाँ? / फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ / संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है / उनका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है"

एक विशाल भू-खंड में फैला यह देश भारत आप में समृद्धशाली परंपरा का प्रतिनिधित्व करता नज़र आता है। भारत जिसकी परंपरा समृद्ध है, इतिहास उतना ही गौरवशाली। विशिष्टता जितनी अद्वितीय है, संस्कृति उतनी ही अक्षुणन। वह जो ऋषि-मुनियों के तप, त्याग और समर्पण से पल्लवित-पुष्पित हुआ है। विभिन विचारों ने जिसमें सत्कर्मों की आहुति देकर गढ़ा है।

किसी देश की वैश्विक फलक पर छवि निर्मिती में संस्कृति की अहम भूमिका होती है। सांस्कृतिक पक्ष ही वह संपत्ति है, जो उसकी दिशा का निर्धारक बनती है। इसके अंतर्गत समग्र भारतवासी के आचार-व्यवहार, जीवन संस्कार, भाषिक संपदा, क्षेत्रीय विशेषताएँ, पर्व-त्यौहार, वस्त्र-आभूषण, जीविकोपार्जन आदि तमाम चीजें सम्मिलित हैं, जो आपस में एक सूत्र में बंधकर भारत की सांस्कृतिक विशेषता बनकर उभरती है और विविध रूपों में अभिव्यक्ति का माध्यम बनती है। ऐसे में कविता, जो युग और जनमानस का प्रतिबिंब हो उससे कैसे अनभिज्ञ रह सकती है। साहित्येतिहास के आरंभिक बिंदु से आज तक की इस सुदीर्घ यात्रा में कविता विभिन्न साहित्यिक विषयों द्वारा अभिव्यक्ति करती नज़र आती हैं, जिनमें राष्ट्रीय और सांस्कृतिक पक्ष भी विद्यमान रहें है। देश, काल और परिस्थिति के अनुसार उसमें बाहुल्यता व सीमितता का होना स्वभाविक है। उदाहरणस्वरूप; भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता की भावना फूटती है, जिसकी प्रारम्भिक और सक्रिय झलक हम भारतेंदु में पाते हैं:- रोवहू सब मिलिं आवहु भारत भाई। / हा हा! भारत दुर्दशा देखी जाई।।

और द्विवेदीयुगीन कड़ी को पार कर स्वच्छंदतावादी युग में 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा' के रूप में अपनी अस्मिता को विस्तार देती नज़र आती हैं, हालाँकि इससे पूर्व भी ये तत्व विद्यमान रहें, किंतु अप्रत्यक्ष रूप में इनकी अधिकता रही। ऐसे में प्रत्येक युगीन परिस्थितियों में नवीन रूप में साहित्यिक प्रवृतियाँ दृष्टिगोचर होती है।

सन उन्नीस सौ साठ के बाद से कविता की ज़मीन भी बदली। क्षणभंगुरता, निराशा, मोहभंग तथा अतियथार्थवाद आदि तमाम तत्वों की विशेष मौजूदगी कविता में देखने को मिलती है, किंतु उनमें भारतीय व सांस्कृतिक पहलुओं को भी देखा जा सकता है। मुक्तिबोध 'अंधेरे में' काव्य में

सारिका ठाकुर
(शोधार्थी) हिन्दी साहित्य विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी
विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र-442001
मोबाइल- 9511803927
ईमेल- sarikathakur406@gmail.com

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

Scanned with OKEN Scanner

साहित्य का दार्शनिक परिप्रेक्ष्य और हिंदी कविता

सारिका ठाकुर
पी-एच.डी., शोधार्थी, हिन्दी साहित्य-विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र-442001
ई-मेल - sarikathakur406@gmail.com

साहित्य अथाह संभावनाओं का द्वार है। समूचे मानव जगत के साथ मानवेतर जगत के विकास, विस्तार और भाव के व्यापार में इसकी भूमिका है। सृष्टि में जो भी तत्व विद्यमान है उन सबको संजोने और समृद्ध करने का प्रयास करता है, ऐसे में साहित्य अपने आप में अनेक व्यापकताओं को समेटे हैं, जिनमें एक पक्ष दर्शन भी है। जिसमें साहित्य के प्राण बसते हैं। सत्य की खोज और दूरदर्शी दृष्टि ही किसी रचनाकार की ताकत होती है। बिना विचार के रचना शून्य हैं और बिना दर्शन के विचार। ऐसे में साहित्य तमाम दृष्टिकोण से समृद्ध होता हुआ फलता-फूलता है और उसकी शाखाएँ तमाम गुणधर्मों को साहित्य में सम्पोषित करती है। विशेषकर हिंदी कविता तमाम दर्शनों से ओतप्रोत है। जो दर्शन के विभिन्न प्रयोज्यों की पूर्ति करती नज़र आती है और कविता की ज़मीन को और ऊर्वर बनाती है। अत: हिंदी कविता में वैविध्यता, नूतनता और समृद्धि लाने में दर्शन की विशेष भूमिका है।

एक लंबे समय से युगांतकारी माध्यम के रूप में साहित्य सदैव कार्यशील है। मानव के विकास की भांति साहित्य के विकास की भी अपनी समृद्ध परंपरा रही है, जिसे संजोने और भावी पीढ़ी के हस्तांतरण में इतिहास व ऐतिहासिक तथ्यों की विशेष भूमिका है। जो समय और समाज में घटित तमाम हलचलों, परिस्थितियों व घटनाओं को संजोने का कार्य करती है। जिसमें समाज के तमाम गतिविधियों और समस्त मानवीय क्रियाकलापों भी विद्यमान रहते हैं। और कहीं मुखर तो कहीं गौण रूप में विद्यमान रहती है परंपराएं, मान्यताएं, आचार-व्यवहार, मूल्य-संस्कार, संवेदनाएं-सर्जनाएं, ध्वंस-सृजन, विरोध-समर्थन तथा हर्ष-विषाद आदि। जो समूचे मानव-समुदाय की छवि को प्रस्तुत करने में सक्षम है। यथार्थ और अनुभूति का एक लंबा संघर्ष चलता आया है क्योंकि कुछ हद तक यह एक दूसरे के विपरीत कार्य करते नजर आते हैं। यथार्थ जहां मोहभंग की स्थिति में ला खड़ा करती है, वही अनुभूति उसे और गहन बनाती है। किंतु साहित्य सदैव इनके संघर्ष द्वारा समन्वय का प्रयास करती नजर आती है। जमीन पर खड़े होने के लिए पैर के नीचे की ज़मीन को टटोलना आवश्यक है। अतः स्वप्न व कल्पनालोक की अपेक्षा सत्य को जानना परम आवश्यक है, तभी समाज के अनुकूल व्यक्ति किसी कार्य का निष्पादन करने में सक्षम हो सकते हैं और यथार्थपरक स्थिति को जान, उससे सीख लेकर हम मानवीय संवेदनाओं को बचाने हेतु प्रयत्नशील हो सकते हैं। अर्थात साहित्य संभावनाओं का द्वार है। समूचे मानव-जगत के साथ मानवेतर जगत के विकास, विस्तार और भावों के व्यापार में इसकी भूमिका है। सृष्टि में जो भी तत्व विद्यमान है साहित्य उन सब को संजोने और समृद्ध करने का प्रयास करती है। ऐसे में साहित्य अपने आप में अनेक व्यापकताओं को समेटे हैं जिनमें एक महत्वपूर्ण पक्ष दर्शन का भी है जिनमें साहित्य के प्राण बसते हैं।

"दृश्यते यथार्थ तत्वमनेन "1

अर्थात् यथार्थ तत्व की अनुभूति जिसके द्वारा संभव हो वही दर्शन है। यथार्थता का संबंध सत्य से है। प्रत्येक विषय का प्रयोजन व साध्य यही है। जिसकी प्राप्ति हेतु अनंत साधन जुटाए जाते हैं। सत्य की खोज व सत्य तक पहुंच रूपी अंतिम ध्येय में दर्शन की विशेष भूमिका होती है। यही सृजन का आधार भी बनता है। साधारण शब्दों में

AKumar
PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)
Scanned with OKEN Scanner

Ref. :........................ Date :........................

3.2.1

E-copies of outer jacket/contents page of the journals in which articles are published.

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

अंक 14   जनवरी-मार्च (2020)   ISSN 2348-7771

PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL

आभ्यंतर

लोक, भाषा, विश्व साहित्य और समकालीन वैचारिकी का मंच

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College

SSN 2394-5303

Printing® Area

Issue-63, Vol-01 March 2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

मासिक
RNI No. MPHIN/2004/13239

अक्षर वार्ता

मूल्य 100/- रुपये

वर्ष-19 अंक-7
(मई-2023)
Vol.-XIX Issue No.-VII
(May-2023)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed in International Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with the
Indexed in the International Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521, IMPACT FACTOR - 7.125
AKSHARWARTA is registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-48-0005021

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्य 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-19 अंक - 7 , मई - 2023
Vol - XIX, Issue No. VII
May - 2023
Impact Factor - 7.125

aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा

संपादक- डॉ. मोहन बैरागी

संपादक मंडल :-

डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा

सहायक सम्पादक :-

डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे),
श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),
डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर
गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस),
प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरु), प्रो. अब्दुल अलीम
(अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),
डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),
डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया
(उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला
(राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन
व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात),
प्रो. डॉ. किरण ग्रोवर (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (Kruti Dev 010) या युनिकोड मंगल फॉन्ट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फॉन्ट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. Please Follow- APA/MLA Style for formatting अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रान्सफर या जमा किया जा सकता है।

बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक :- Union Bank of India,

Account Holder -	Aksharwarta
Current Accont NO.	510101003522430
IFSC- UBIN0907626	Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि यूपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें

आप भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता - संपादक अक्षर वार्ता

43,क्षीर सागर,इंदिरा मार्ग,उज्जैन,म.प्र. 456006,भारत, मोबा. :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट :- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ - इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित पत्रिका UGC Approved Journal - UGC Care Review

ISSN NUMBER : 2455-9717 RNI NUMBER :- MPHIN/2016/67929

शिवना प्रकाशन

वर्ष : 8

अंक : 31

अक्टूबर-दिसम्बर 2023

मूल्य 50 रुपये

शिवना साहित्यिकी

शोध, समीक्षा तथा आलोचना की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका

मानचित्र

प्रदीप सैनी

हमारी सभ्यताओं का स्थापत्य
उनके पसीने से जन्मा है
हमारी रोशनियों में चमकता लाल
उनके लहू का रंग है
कोई चौराहा
उन्हें दिशाभ्रमित नहीं करता
वे जानते हैं कौन-सा है
शहर से बाहर जाने का रास्ता
वे नहीं पूछेंगे हमसे
कौन-सी सड़क जाती है उनके गाँव
उन्हें याद हैं
लौट जाने के सभी रास्ते
उनके तलुओं में
दुनिया का मानचित्र है।

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2394-2665
विशेषज्ञ समीक्षित शोध पत्रिका
(Peer Reviewed Research Journal)
वर्ष : 10, अंक : 03, 2024 ई०

अरुणागम

भाषा, साहित्य, समाज, संस्कृति से संबंधित शोध की वार्षिकी

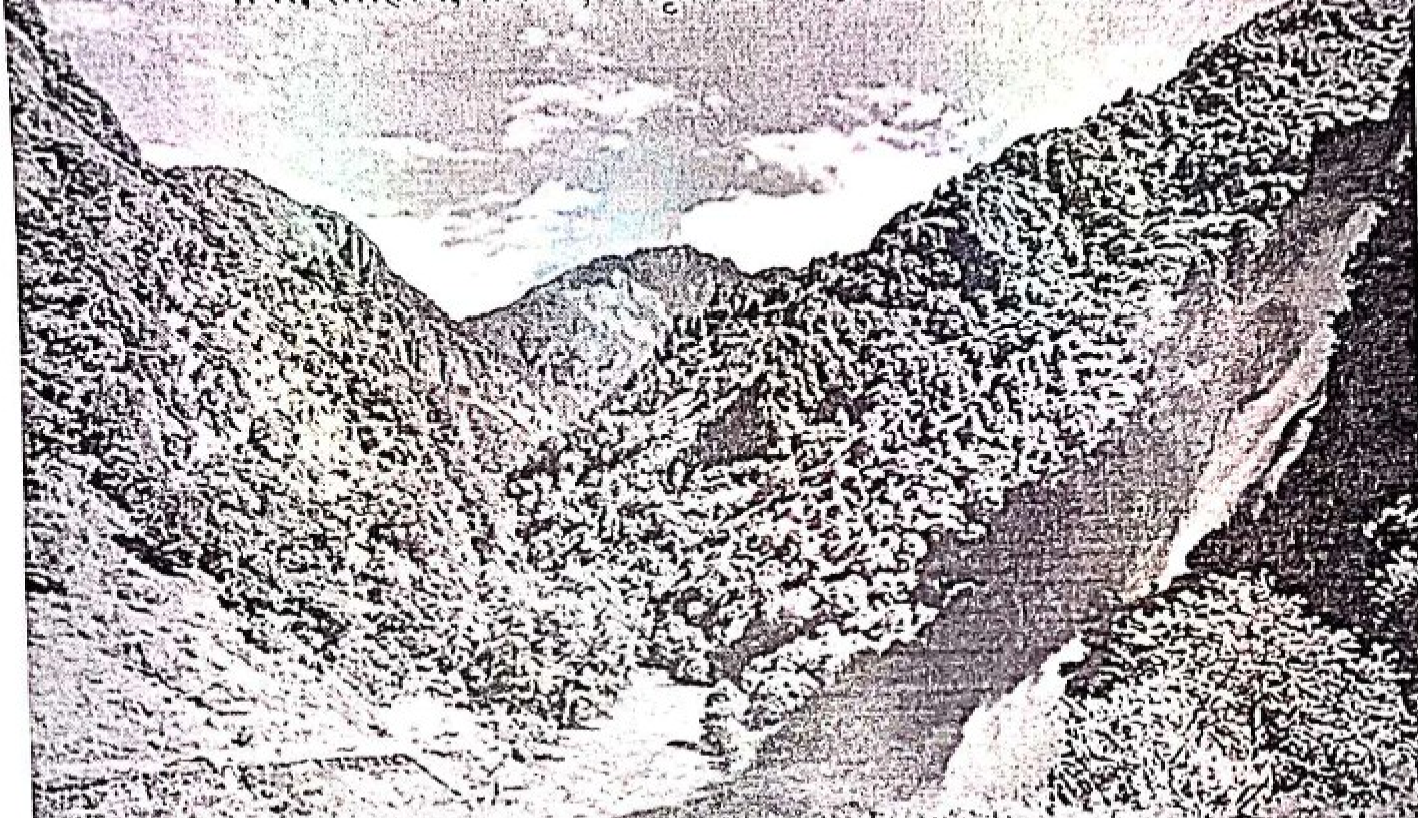

प्रकाशक :
शोध एवं विकास प्रकोष्ठ
जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पासीघाट
अरुणाचल प्रदेश, 791103

Scanned with OKEN Scanner

PRINCIPAL
Bhagwan Prasad Sheonath Prasad B.Ed. College
Daudnagar, Aurangabad (Bihar)